IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13733

श्रीमद्भागवत में वर्णित खगोल विज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. कीर्ति कुमार त्रिपाठी[1], केशवेन्द्र कुमार द्विवेदी[2]

निर्देशक-सहायक प्राध्यापक-संस्कृत, यमुना प्रसाद शास्त्री, महाविद्यालय, सिरमौर (म.प्र.)[1]

शोधार्थी-शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)[2]

सारांश:

श्रीमद्भागवत् में खगोल विज्ञान का वर्णन केवल धार्मिक प्रतीकवाद नहीं है; इसमें तारकीय विज्ञान, ग्रहों की गति, सृष्टि और प्रलय के चक्र, तथा ब्रह्मांडीय संरचना जैसे विषयों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण शामिल है। आधुनिक शोध इसे प्राचीन भारतीय खगोल विज्ञान का आधार है। आज तारों और नक्षत्रों के आकार में व्यवस्थित बताया गया है। यह आकाशीय तारकीय विज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। ग्रहों की गति सूर्य, चंद्रमा और अन्य ग्रहों की गतियों तथा कक्षाओं का वर्णन मिलता है, जो आधुनिक खगोल विज्ञान से संबंधित हैं। सृष्टि और प्रलय ब्रह्मांडीय चक्रों का उल्लेख किया गया है, जिसमें कल्प, मन्वंतर और प्रलय के समय-मान शामिल हैं। काल चक्र समय की गणना युगों के चक्रों और तारों की गतियों के माध्यम से की गई है। विज्ञान और खगोल विज्ञान के विकास के साथ-साथ ग्रहों और तारों के प्रभाव को दर्शाया गया है। उसी प्रकार भारतीय दर्शन में योग का विषय अनंत और असीम है। सभी आचार्यों ने इसकी अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं। योग जैसे गहन और कठिन विषय में प्राचीन आचार्यों के बीच अनेक विभिन्न मत होना स्वाभाविक है। कोई विषय जो सूक्ष्म और जटिल होने के कारण अनेक दृष्टिकोणों से परखा जाता है, वह एक प्रकार से उसकी महत्ता का भी संकेत है। "योग" शब्द संदर्भ के अनुसार अनेक अर्थों में पाया जाता है।1 इसलिए इसे किसी सीमित या सांकेतिक अर्थ में बाँधना उचित नहीं है। कुछ लोग योग का अर्थ समाधि मानते हैं, जबकि अन्य के अनुसार योग का अर्थ अष्टांग योग के माध्यम से चित्त की वृत्तियों का निरोध है। कुछ लोग योग का अर्थ सहयोग लेते हैं, जबकि कुछ के अनुसार "योग" शब्द दो अवस्थाओं के मिलन या जुड़ने का संकेत करता है। श्रीमद्भागवतम् में वर्णित खगोल विज्ञान आधुनिक खगोल विज्ञान के कई सिद्धांतों के अनुरूप है। यह तारकीय विज्ञान, ग्रहों की गति, अंतरिक्ष संरचना और पुनर्जन्म से संबंधित ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान मिशन के शोधकर्ता भी प्राचीन ग्रंथों में वर्णित खगोलीय घटनाओं की आधुनिक उपकरणों के साथ तुलना कर रहे हैं यहाँ तक सौर की गतिविधियाँ तक सामिल हैं। गहन विचार करने पर यह स्पष्ट होता है कि योग की व्याख्या "त्याग" के रूप में करना उचित है। चाहे वह किसी इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संयोग द्वारा हो या स्वतंत्र रूप से, योग का अर्थ "त्याग" के रूप में तार्किक और उद्देश्यपूर्ण है। सामान्य व्यवहार में भी योग का अर्थ त्याग के रूप में देखा जाता है। उदाहरण के लिए, लोग कहते हैं, "फलाँ व्यक्ति योगी बन गया है," या "फलाँ व्यक्ति ने संसार का पूर्ण रूप से त्याग कर दिया प्रतीत होता है।" संन्यास योग, सांख्य योग, निष्काम कर्म योग आदि शब्दों से यह सिद्ध होता है कि अंततः योग शब्द केवल त्याग को ही दर्शाता है। क्योंकि एक वस्तु के त्याग के बिना दूसरी वस्तु के साथ संयोग संभव नहीं हो सकता।

मुख्य शब्द: सृष्टि, प्रलय, चक्र, ब्रह्मांडीय, वैज्ञानिक, नक्षत्रों, सूर्य आदि।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि:- इस शोध पत्र मंे विषय श्रीमद्भागवत में वर्णित खगोल विज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीय शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में साक्षात्कार, विद्वानों का मार्गदर्शन एवं द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अध्ययन किया गया है।

समस्या

सांसारिक वस्तुओं के प्रति अनासक्ति के माध्यम से ब्रह्म-साक्षात्कार। इस विषय में किसी के बीच कोई मतभेद नहीं है। अतः यह सिद्ध होता है कि योग में जिस विषय की परीक्षा अभिप्रेत है, वह अनासक्ति है और उसका फल ब्रह्म की प्राप्ति है। अनासक्ति को इच्छाओं का त्याग भी कहा जाता है। सांसारिक इच्छाओं का उचित विलय योग का कार्य है। इच्छाओं, कर्मों और आसक्ति का त्याग दो प्रकार से किया जा सकता है। मानव की आशक्ति की सबसे बड़ी सामाजिक समस्या है।

 This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13733

उद्देश्य

वास्तव में, योग क्या है? इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, और इसके लिए क्या करना चाहिए? यह एक जटिल और गहन प्रश्न है। इस विषय में विद्वानों के बीच अनेकों मतभेद पाए जाते हैं, जैसे अष्टांग योग, हठ योग, राज योग, भक्ति योग, प्रेम योग, ध्यान योग, संन्यास योग, सांख्य योग, समाधि योग, क्रिया योग आदि का उल्लेख किया गया किसी वांछनीय वस्तु का उसके भौतिक स्वरूप में त्याग और इच्छा तथा लालसा का त्याग। इस ब्रह्मांड की विविधता और विशालता को देखते हुए, वास्तविक त्याग केवल इच्छाओं और लालसाओं के परित्याग से ही संभव हो सकता है। यदि कोई हठयोग या अन्य साधनाओं द्वारा वन में जाकर संसार के भौतिक स्वरूप का त्याग भी कर दे, तो भी वह पूर्ण त्याग नहीं बन सकता। संसार का अस्तित्व किसी न किसी रूप में बना रहेगा। सभी का उद्देश्य एक ही है। वह है बाहरी संसार का त्याग कर देने पर भी आंतरिक संसार का त्याग नहीं होगा। केवल भौतिक शरीर के माध्यम से पंचमहाभूतों का त्याग नहीं किया जा सकता। जब तक शरीर विद्यमान है, तब तक शरीर के स्वरूप का त्याग संभव नहीं है; इसलिए इच्छाओं के त्याग को ही त्याग का वास्तविक स्वरूप माना जाना चाहिए।

समाधान

इच्छाओं के त्याग के लिए वन जाने या किसी विशेष साधना को करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए ब्रह्म को जानने वाले गुरु के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना होगा और अंतःकरण में जड़ जमाए इच्छाओं का परित्याग करना होगा। संघर्षों से भरे जीवन की चंचलता को नष्ट करके समत्व के राज्य में प्रवेश करना होगा। "समत्वं योग उच्यते" का पालन करना होगा; इस विश्वास को दृढ़ता से स्थापित करना होगा कि "वास्तव में सब कुछ अनासक्त है"; सांसारिक ऐश्वर्य प्राप्त होने पर भी कमल-पत्र के समान अनासक्त रहना होगा; जीवित रहते हुए मृतवत् होना होगा और संसार के बंधनों से मुक्त सच्चा जनक बनना होगा; तभी भोगों के मध्य योग के आनंद का अनुभव किया जा सकता है और वन की अपेक्षा घर में अधिक मंगलमय जीवन जिया जा सकता है। यही योग कहलाता है।2 हठयोग द्वारा किसी प्रवृत्ति को पूर्ण रूप से नष्ट करना या किसी प्रवृत्ति के उत्पन्न होने से पहले ही उसे नष्ट कर देना वास्तविक योग नहीं है। दमन वास्तविक त्याग नहीं है; बल्कि यह केवल त्याग का उपहास है।3 त्याग की शक्ति में दुर्बलता प्रदर्शित करना एक प्रकार से योग का अनादर करने के समान है।4 श्रीमद्भागवत में वर्णित खगोल विज्ञान का वैज्ञानिक अध्ययन, जिसमें पंचम स्कंध आदि सम्मिलित हैं।5 खगोलीय परिस्थितियों को सुदृढ़ करना और उनमें निहित शक्ति को जागृत करना होगा। यदि वैज्ञानिक चेतना जागृत होती है, तो समस्त ज्ञान और विज्ञान समाज के समक्ष आएगा।6 श्रीमद्भागवत में विश्वामित्र आदि ऋषियों ने महान वैज्ञानिक अनुसंधान किए हैं और विनाशकारी शक्तियों का समूल नाश किया है।7 वर्तमान समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने के उपायों पर बल दिया जाएगा। सामाजिक चेतना को जागृत करके यह समझाया जाएगा कि यदि समाज के कल्याण के लिए आवश्यक हो, तो व्यक्ति को कैकेयी के समान बनने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। कैकेयी ने संसार के कल्याण के लिए ही राम को वनवास भेजने का वरदान माँगा था; यदि उन्होंने ऐसा न किया होता, तो पृथ्वी राक्षसों से कैसे मुक्त होती और ऋषि-मुनि भक्ति कैसे कर पाते? क्योंकि ऋषि-मुनियों का प्रत्येक कार्य केवल संसार के कल्याण के लिए होता है।8

निष्कर्ष

खगोल विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन को जागृत करने और उसमें उत्साह उत्पन्न करने का कार्य करेगा। भारतीय साहित्य में वैज्ञानिक विचारों को सदैव महत्व दिया गया है। इसकी अंतर्निहित छिपी हुई विशेषताओं को जागृत करके समाज आत्म-संरक्षण की इच्छा या जीवित रहने की प्रवृत्ति मानव जाति का सर्वोच्च सिद्धांत है; केवल मनुष्यों में ही नहीं, बल्कि सभी जीवित प्राणियों में जीवन के लिए यह संघर्ष पाया जाता है। सिंह, बाघ, बिल्ली, कुत्ते और अन्य प्रजातियों के पशु, पक्षी, यहाँ तक कि कीट-पतंगों के पास भी पंजे, पैर, दाँत, सींग और अन्य रक्षा तथा आक्रमण के साधन होते हैं, जिनके द्वारा वे अपनी रक्षा कर सकते हैं और अपने जीवन को बनाए रख सकते हैं। वैज्ञानिक, समाजसेवी, देशभक्त, कवि, संत और पापीकृसभी अपने-अपने तरीकों से और अधिकांशतः अनजाने में इतिहास के पन्नों पर अपना नाम अंकित करने का प्रयास करते रहते हैं, ताकि उनका जीवन अमर हो जाए और भौतिक शरीर के छूट जाने के बाद भी चलता रहे। भयंकर पीड़ा से ग्रस्त होकर आत्महत्या करने वाला रोगी स्वयं को पूरी तरह नष्ट करने के उद्देश्य से ऐसा नहीं करता, बल्कि इस भौतिक जीवन के कष्टों और पीड़ाओं से मुक्त होने के लिए ऐसा करता है। योगियों का विश्वास है कि यह अमर जीवन केवल स्थूल शरीर की क्रियाओं और मन की वृत्तियों के निरोध से ही प्राप्त होता है।

खगोल विज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन पर कार्य भारतीय साहित्य के लिए अनुकरणीय प्रतीत होता है। वर्तमान समय का व्यस्त समाज स्वयं को, अपने परिवार को, अपने समाज को और यहाँ तक कि अपने राष्ट्र को भी उचित रूप से समझने में असमर्थ है; इसलिए उसे एक नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। इस शोध कार्य के माध्यम से समाज निरंतर वैज्ञानिक उन्नति और प्रगति प्राप्त करता रहेगा।

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13733

सन्दर्भ

[1]. द्वादश ज्योतिर्लिंग, गीताप्रेस गोरखपुर, 2075, पृष्ठ 134
[2]. शिवपुराण, कोटिरुद्रसंहिता, 25/13-15
[3]. श्रीमद्भगवद्गीता, 12/2
[4]. काणे, डॉ. पाण्डुरंग वामन, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग-5, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 2014, पृष्ठ 220
[5]. श्रीमद्भगवद्गीता, 7/255
[6]. श्रीमद्भगवद्गीता, 7/1-3
[7]. कीथ, ए.बी., संस्कृत साहित्य का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 165
[8]. गैरोला, वाचस्पति, भारतीय धर्म शाखाएँ और उनका इतिहास, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2008, पृष्ठ 12

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License